

विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पहुंचा देता है। —महात्मा गांधी

एक नई पहल के बहाने किताबों के बारे में कुछ जरूरी बातें!

किताबों, और विशेष रूप से हिंदी की किताबों और उनमें भी विशेष रूप से साहित्यिक किताबों की कोई भी चर्चा थोड़ी देर में इस बात पर आकर टिक जाती है कि किताबें बहुत महंगी हैं। खास तौर पर जब हम अंग्रेजी की किताबों से तुलना करते हैं तो यह बात सही भी लगती है। किसी और की बात न करके अगर अपनी ही बात करूँ तो मेरी लगभग चौने तीन सौ पेज की किताब की कीमत पांच सौ रुपये है। हालाँकि यह सजिले संस्करण की कीमत है, अगर इतने ही पन्नों के पेपरबैक संस्करण की बात करें तो वह भी ढाई तीन सौ रुपये से कम का नहीं होगा। कहना अनावश्यक है कि अंग्रेजी किताबों की कीमत इनसे काफी कम होती है। यह बात मैंने पाठक के नज़रिये से कही है। अगर आप प्रकाशक के नज़रिये से देखें तो पता चलेगा कि हिंदी में ज्यादातर किताबें सरकारी खरीद में जाती हैं और वहाँ बीस-तीस प्रतिशत कमीशन तो वैध रूप से ही देना होता है। टेबल के नीचे जो आदान-प्रदान होता है, वह अलग है। प्रकाशकों का यह भी कहना है कि अंग्रेजी में किसी किताब की जितनी प्रतियाँ बिक जाती हैं, उतनी हिंदी में नहीं बिकती है, इसलिए भी लागत बढ़ जाती है। इन बातों को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता है। इनके अलावा एक मुद्दा हिंदी में किताबों की उपलब्धता का भी है। मुझ जैसे लोगों की जो लिखते भी हैं और पढ़ते भी हैं, बड़ी शिकायत यह भी है कि हिंदी का प्रकाशक व्यक्तित्वगत पाठक को अपनी किताबें बेचने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है। उसे जितना व्यवसाय करना है उतना वह सरकारी बिक्री करके कर लेता है। इसके जवाब में प्रकाशक शायद यह कहे कि जब कोई खरीदता ही नहीं है तो वह अपनी किताब बेचे कैसे?

सवाल यह है कि क्या इन समस्याओं का कोई हल नहीं निकाला जा सकता है? और यह सवाल मुझे सुझा है राजस्थान बालिक जयपुर के एक नामी प्रकाशक की एक पहल से। इस प्रकाशक ने 1995 में शुरू हुए अपने प्रकाशन के तीसवें साल में एक अनूठी योजना की घोषणा की है। यह प्रकाशक कुर्निदा साहित्यकारों की लघु कलेक्टर की रचनाओं का एक सेट प्रकाशित कर रहा है। इस सेट में हर पुस्तिका बतौर पेज (आवरण पृष्ठ अलग) की होगी और उस पुस्तिका का आकार सामान्य डिमाई (8.5x5.5 इंच) पुस्तक के आकार से आधा (4.25x5.5 इंच) होगा। इस आकार की पुस्तक को आसानी से जेब में रखा जा सकता है। महत्वपूर्ण बात है इस किताबियाँ का मूल्य प्रकाशक के अनुसार तीन किताबों का यह सेट मात्र एक सौ पचास रुपये में, अर्थात् प्रति पुस्तक पांच रुपये में उपलब्ध होगा। प्रकाशक द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस सेट में इक्कीस कविता पुस्तकें, तीन गज़ल संग्रह, एक लघु कथा संग्रह, और पांच कथेतर गद्य की किताबें हैं। इनके लेखकों में अनेक सुपरिचित नाम शामिल हैं। विधाओं के लिहाज़ से भी यहाँ वैविध्य है, हालाँकि कविताओं की तरफ झुकाव कुछ ज्यादा है। कविता संग्रह कम करके कुछ कहानी संग्रह भी जोड़े जा सकते थे, हालाँकि बतौर पेज में ज्यादा से ज्यादा चार कहानियाँ ही आ पातीं।

पांच रुपये में एक किताब, चाहे वह कितनी ही दुबली क्यों न हो, बहुत आकर्षक है। अच्छी बात यह भी है कि प्रकाशक ने पूरा सेट खरीदने की बाधता नहीं रखी है, इसलिए कोई भी एक-दो-तीन-चार पुस्तकें खरीद कर अपनी पढ़ने की ललक को पूरा कर एक शुरुआत कर सकता है। यहाँ यह भी याद कर लेना उचित होगा कि कुछ बरस पहले इसी प्रकाशक ने दस-दस रुपये वाली दस-दस किताबों के एक के बाद एक तीन सेट प्रकाशित करके हिंदी प्रकाशन जगत में भारी हलचल पैदा की थी। उन सेटों को हाथों-हाथ लिया गया था।

इस बात पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए कि कैसे लेखक को उसके श्रम का प्रतिफल मिले। श्रम का प्रतिफल मिलने लगेगा तो वह अपने लेखन कर्म को अधिक समय भी दे सकेगा। लेखक और प्रकाशक के बीच विश्वास और सद्भाव का रिश्ता होना चाहिए, जो दुर्भाग्य से अभी नहीं है। लेखक प्रकाशक से नाराज़ हैं और प्रकाशक लेखक से असंतुष्ट। यह स्थिति बदलनी चाहिए और इसके लिए दोनों ही पक्षों को ईमानदार प्रयास करने होंगे।

अभिनव योजना की चर्चा को उस योजना में एक बड़ी बाधा वितरण और पुस्तकों की उपलब्धता की है। चलिए, जयपुर का पाठक तो प्रकाशक के यहाँ जाकर भी सेट या अपनी पसंद की किताबें ले आएगा, जो जयपुर से बाहर है वह कैसे इस योजना का लाभ ले सकेगा? खुद प्रकाशक ने भी कहा है कि हाल में डाक व्यवस्था बहुत बढ़ गयी है इसलिए जो लोग इस सेट को डाक से मंगवाना चाहेंगे उन्हें इसके लिए पिकहतर रुपये और देने होंगे। मतलब यह कि जितने की किताब उससे आधा डाक उठेगा यह किसी को भी अखरेगा। भले ही सरकार द्वारा की गई इस वृद्धि का सभी पढ़ने लिखने वालों ने विरोध किया है, इस बात की कोई उम्मीद नहीं है कि सरकार अपना यह कदम वापस ले। तो अगर आपको डेढ़ सौ रुपये वाली तीस किताबें चाहिए तो पिकहतर रुपये डाक व्यवस्था खर्च करने ही पड़ेंगे। और मुझे भय है कि बहुत सारे लोग इस बात से बिचक जाएँगे।

क्या इस समस्या का कोई समाधान सम्भव है? क्या इस बात पर विचार किया जा सकता है कि बड़े-बड़े स्टोर्स पर भी ये किताबें विक्रयार्थ उपलब्ध कराई जाएँ? अमरीका में मैंने बड़ी-बड़ी मॉल्स में किताबें बिकती देखी हैं। क्या इस बात की भी कोई संभावना है कि हम पुस्तक प्रेमी अपने-अपने मोहल्लों में इन किताबों के वितरण करें, या जिन दुकानों आदि से हम खरीदारी करते हैं उन्हें ये किताबें रखने के लिए प्रेरित करें! बेचक इन सुझावों को क्रियान्वित करने के लिए प्रकाशक को भी अतिरिक्त श्रम करना पड़ेगा, उसका कुछ पैसा शायद डूबे भी लेकिन इस तरह के साहसिक प्रयोग करके ही कोई राह बनाई जा सकती है। और ये सारी बातें केवल किसी एक प्रकाशक की किताबों के लिए नहीं हैं। असल बात तो यह है कि किसी भी तरह किताबों को लोगों तक ले जाना जाए!

यहाँ एक बात और। हम अपने साहित्यिक आयोजनों में औपचारिकताओं पर जैसे विशिष्ट अतिथियों को मालाएं पहनाने और उन्हें स्मृति चिह्न देने आदि पर काफी खर्च करते हैं। क्या इन सबकी बजाय हम पुस्तकें नहीं दे सकते? ऐसा करने से पुस्तकों की बिक्री बढ़ेगी और लोगों तक पुस्तकें पहुंचेंगी भी। ऐसा करने में मुझे कोई व्यावहारिक दिक्कत नज़र नहीं आती है। हो सकता है कुछ लोग यह कहें कि पुस्तक उन्हें दी गई है वह या तो पहले से उनके पास है या फिर उसमें उनकी दिलचस्पी नहीं है। लेकिन यह बात तो इससे भी अधिक मालाओं, इधर चलने में आए दुपट्टों और स्मृति चिह्नों पर भी लागू होती है। मालाएं तो प्रायः उसी समय उतारकर रख दी और बाद में फेंक दी जाती हैं, दुपट्टों और स्मृति चिह्नों के बारे में बात न की जाए तो ही अच्छा होगा। किताब हम किसी और को भी भेंट में दे सकते हैं, अगर उसमें हमारी रचि न हो। सबसे बड़ी बात तो यह कि ऐसा करके हम पुस्तक संस्कृति का प्रसार ही करेंगे। यह काम स्वाभाविक रूप से सबसे पहले साहित्यिक संगठनों की करना चाहिए।

हिंदी किताबों के संदर्भ में प्रायः उनकी गुणवत्ता को लेकर भी अनेक प्रतिकूल बातें की जाती हैं। जैसी हमारे यहाँ स्थितियाँ हैं, बहुत कम लेखक ऐसे हैं जिन्हें उनके लिखे का कोई प्रतिफल मिलता है। उनकी किताब अगर प्रकाशक बिना पैसे लिए छाप दे तो वे अपने को भाग्यशाली मान लेते हैं। पारिश्रमिक और रॉयल्टी तो कल्पनातीत है। इस बात पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए कि कैसे लेखक को उसके श्रम का प्रतिफल मिले। श्रम का प्रतिफल मिलने लगेगा तो वह अपने लेखन कर्म को अधिक समय भी दे सकेगा। लेखक और प्रकाशक के बीच विश्वास और सद्भाव का रिश्ता होना चाहिए, जो दुर्भाग्य से अभी नहीं है। लेखक प्रकाशक से नाराज़ हैं और प्रकाशक लेखक से असंतुष्ट। यह स्थिति बदलनी चाहिए और इसके लिए दोनों ही पक्षों को ईमानदार प्रयास करने होंगे। लेखक संगठनों को भी इस काम में आगे आना चाहिए। यह सब कोई और नहीं करेगा। हमको ही करना होगा।

—अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राशिफल

सोमवार 3 फरवरी, 2025

माघ मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, रेवती नक्षत्र रात्रि 11:17 तक, साध्य योग रात्रि 3:02 तक, कोलव करण सार्य 5:45 तक, चन्द्रमा रात्रि 11:17 से मेघ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरु-वृष, शुक-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।
आज रवि योग रात्रि 11:17 तक है। कुमार योग रात्रि 11:17 से रात्रि 4:38 तक है। आज शीतला षष्ठी है। पंचक रात्रि 11:17 तक है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:58 से 11:19 तक, चर 2:02 से 3:23 तक, लाभ-अमृत 3:23 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:15, सूर्यास्त 6:07



पंडित अनिल शर्मा

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक-धुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में परेशानियाँ दूर होने लगेगी। अटक हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बने लगेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्य के लिए दिन ठीक नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आर्थिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानियाँ हो सकती हैं।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बने लगेगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
मानसिक तनाव दूर होगा। वर्तमान में चल रही परेशानियाँ दूर होने लगेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

शिक्षा का बाजार-जिसको जैसी चाहिए खरीद लेता है



प्रो. अशोक कुमार

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व के समग्र विकास एवं राष्ट्र के नागरिक तैयार करने में किसी भी देश में शिक्षा की अहम भूमिका है। देश के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण कारकों में

से एक है। इसे समय और दुनिया के बदलते परिदृश्य की जरूरतों के अनुरूप बदलना चाहिए। यह मानवता का सामना करने वाले सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक नैतिक और आध्यात्मिक मुद्दों पर गंभीर रूप से प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान करता है। हमारी अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए अधिक कुशल और शिक्षित लोगों की आवश्यकता है। हमारे आपसपास कई भारतीय हैं जो अपनी क्षमताओं और कौशल के लिए जाने जाते हैं। भारत को शिक्षा हब के रूप में विकसित करने या वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक समृद्ध भागीदार बनने के लिए भारत को विशेष रूप से अनुसंधान और विकास के साथ सामान्य और उच्च शिक्षा में शिक्षा को गुणात्मक रूप से मजबूत करना है।

वर्तमान में शिक्षा का बाजार अपने आप में एक पूर्ण बाजार हो गया है। पूर्ण बाजार का अर्थ है कि जिस वस्तु की मांग और पूर्ति, आपस में पूरी तरह मेल खाए, जैसे चाय का बाजार। आप जिस समय चाहे, जितनी मात्रा में चाहे, जिस दाम पर चाहे, आकाश-पाताल सब जगह, माँग के अनुसार उपलब्ध हो जाती है (5 रुपये से 150 रुपए में)। उसी तरह से शिक्षा का बाजार है। जिस दाम पर चाहिए/जिस जगह चाहिए, जिस तरीके से चाहिए, जिस विषय में चाहिए/ जिस स्तर पर चाहिए, आपको उपलब्ध हो जाती है। सस्ती वाली, महंगी वाली। असलवाली, नकलवाली। कामवाली, बेकाम वाली। स्कूल वाली, घर वाली। पैसे वाली, मुफ्तवाली। सरकार वाली, माफिया वाली। जो भी

लोग चाहें। आई.आई.टी. जैसे संस्थानों में 15-20 प्रतिशत शिक्षकों की कमी है। आज देश का सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र योग्य अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है! विकसित देश में शिक्षा का भविष्य अस्थायी शिक्षकों के सहारे पर निर्भर है जिनको विभिन्न नाम से जाना जाता है : अस्थायी, एडहॉक, सिंडा, पार्टटाइमर, अतिथि, मानद, विजिटिंग, आवश्यकता आधारित, एमओयू प्रोफेसर, शोध विद्वान, ऑनलाइन अतिथि संकाय, स्व अध्ययन। वर्तमान में शिक्षा को सेवा की जगह व्यापार की कोटि में रखा जा रहा है ! आज बाजार की मांग के अनुरूप पाठ्यक्रम और पूंजीपतियों के अत्यधिक व्यवसायिक लाभ के लिए

महाविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थाओं की मान्यता दी जा रही है। शिक्षा बाजार के बारे में पूरी सूचना सबको है। जिसको जिस विषय पर जैसी चाहिए, खरीद लेता है। नहीं तो विदेश जाकर ले लेता है। किस बात का रोना। मिट्टी के दाम पर सोना तो नहीं मिलेगा। सरकार भी नहीं दे सकती है और माफिया भी। सोने के दाम पर ही सोना मिलेगा। और चोरी बेईमानी तो हर वस्तु और सेवा के बाजार में है। शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक संसाधनों की जरूरत है, और ये आए कहीं से, यही सोचने की जरूरत है। —प्रो. अशोक कुमार, पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

भीलवाड़ा के काशीपुरी स्थित श्याम मंदिर में हुआ भव्य श्रृंगार

भीलवाड़ा। भीलवाड़ा के काशीपुरी स्थित श्री श्याम मंदिर में आज श्री श्याम बाबा का भव्य पितांबरी बागा श्रृंगार किया गया। इस अलौकिक दर्शन के लिए हजारों श्रद्धालु उमड़े और पूरे मंदिर परिसर में "जय श्री श्याम" के जयकारों गूंज उठे।

अध्यक्ष सुरेश पोद्दार ने बताया श्री श्याम सेवा समिति के अध्यक्ष सुरेश पोद्दार ने कहा कि पितांबरी बागा का विशेष महत्व है और यह श्रद्धालुओं के लिए बहुत शुभ माना जाता है। उन्होंने कहा, "यह आयोजन हर वर्ष धूमधाम से किया जाता है और बाबा के भक्तों की आस्था दिनों-दिन बढ़ रही है। समिति हमेशा प्रयासरत रहती है कि सभी श्रद्धालुओं को अच्छे से दर्शन और सुविधाएं मिलें।" श्री श्याम सेवा समिति के मीडिया प्रभारी पंकज अठवाल ने बताया कि

आज सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ था। मंदिर को रंग-बिरंगे फूलों और रोशनी से भव्य रूप से सजाया गया था। भजन-कीर्तन की मधुर ध्वनि से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

उन्होंने आगे कहा, "समिति के सभी सदस्य और सेवादार इस आयोजन को सफल बनाने में दिन-रात मेहनत कर रहे हैं, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।" पितांबरी बागा को शुभता, समृद्धि और मंगलकामना का प्रतीक माना जाता है। भक्त इसे अपने गुलक में रखने के लिए बहुत आशीर्वाद प्राप्त किया। इस पावन अवसर पर समिति के सभी पदाधिकारी, सदस्य और सेवादार उपस्थित रहे। नितिन, राहुल, राघव, हरीश, बृजेश, अक्षत और नारायण सहित अन्य समिति सदस्यों ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाबा श्याम के जयकारों के बीच भक्तों ने भक्ति रस में डूबकर आनंद प्राप्त किया।

108 यूनिट रक्तदान

मदनगंज-किशनगढ़, (निस)। वीर गुर्जर युवा मंडल की ओर से भगवान देवनारायण की जयंती की पूर्व बेला एवं किसान नेता पूर्ण केन्द्रीय मंत्री राजेश पायलट की जयंती पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। एडवोकेट राजेश गुर्जर टोकड़ा ने बताया कि राजकीय यज्ञनारायण अस्पताल में आयोज्य शिविर में 108 यूनिट रक्तदान किया।

इससे पूर्व भगवान देवनारायण व राजेश पायलट के चित्र के समक्ष श्रद्धा सुमन अर्पित कर भावांजली दी। विधायक डॉ विकास चौधरी युवा मण्डल अध्यक्ष स्योजीराम चौहान, पूर्व सभापति जगदीप गुर्जर, जिला परिषद सदस्य गणेश तंवर, ब्लॉक अध्यक्ष मोहित खड्डेलवाल, पूर्व अध्यक्ष भोजराज बागडी, कोषाध्यक्ष शंकर बागडी, रोहित धाभाई, नन्दलाल फामडा, मेरुलाल बजाड, देवीसिंह बाबवाल, भागचन्द तेडवा, अशोक कोली, रमेश जुवाणा, तेजपाल बजाड, कानामर बागडी, करतार, रामावतार, अजित चौहान, शोभान मावता, नोतर फागणा, देवा बजाड, कमल गुर्जर, प्रकाश बाबला, भेरू गुर्जर, शिखरी सहित कई आदि समाजबंधु उपस्थित रहे। संचालन भागचन्द तेडवा व एडवोकेट राजेश गुर्जर टोकड़ा ने किया।

बसंत पंचमी पर्व पर निकला विशाल जुलूस

मेड़ता सिटी (निस)। मेड़ता नामदेव लोक शत्रिय दर्जी समाज नवयुवक मंडल के तत्वाधान में बसंत पंचमी पर्व को लेकर विशाल शोभायात्रा निकाली

विशाल शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ नामदेव समाज भवन से निकाली गई जो शहर के मुख्य मार्गों से निकाली गई



यात्रा का जगह जगह पर भव्य स्वागत किया गया।

गई। यात्रा का जगह जगह पर भव्य स्वागत किया गया। नामदेव नवयुवक मंडल अध्यक्ष विनोद रुणवाल ने बताया कि मेड़ता नामदेव टाक दर्जी समाज द्वारा बसंत पंचमी पर्व को लेकर विशाल शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ नामदेव समाज भवन से निकाली गई जो शहर के मुख्य मार्गों से होते रघुनाथ मंदिर, सब्जी मंडी, पुराना चिकित्सालय रोड, चारभूजा चौक, सोनी की, पथ कुम्हारों का मोहल्ला होते हुए अपने गंतव्य स्थान पहुंचे। जहां पर समाज के नागरिकों व महिलाओं का भव्य स्वागत कर प्रसाद दिया गया। वहीं समाज की महिलाओं व बच्चों ने नाचते गाते विशाल

शोभायात्रा का आनंद लिला। इस मौके मेड़ता नामदेव समाज अध्यक्ष श्याम सुंदर खत्री, लाल चंद नागर, अखिल भारतीय मारवाड़ी टांक शत्रिय दर्जियान द्रष्ट पुष्कर के पूर्व अध्यक्ष नवलम लाल तोलंबिया, घेवर चंद तोलंबिया, कैलाश नेरिया, वीरेंद्र वर्मा, मूल चन्द बादू, श्याम लाल सर्वा, लक्ष्मीनारायण बादू,

भगवती लाल टेलर, सरदार दिलेश कुंडवाल, सुरेश तारवान, प्रेम चंद कुंडवाल, विजय तारवान, नरेंद्र तोलंबिया, गौता वर्मा, सुनीता वर्मा, संतोष नागर, सोनू रून्वाल, प्रकाश सर्वा, विजयराज खत्री, महावीर कंवलिया, मनोज वर्मा, विष्णु कुटोच, विनोद इडिवाल, ममता वर्मा, मंजू

कुंडवाल सहित कई समाज की महिलाएं व पुरुष के साथ बच्चे शामिल थे। वहीं पीपा दर्जी समाज ने किया नामदेव दर्जी समाज का स्वागत दर्जी समाज के सामाजिक एकता को बढ़ावा देने के लिए पीपा दर्जी द्रष्ट ने दर्जी समाज मेड़ता का माला व साफा एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया।

गिरादड़ा में लगेगे 11 लाख पेड़, विश्व मानचित्र पर उभरेगा पाली

पाली, (नि.सं.)। सिक्किम राज्यपाल आलम प्रकाश प्रकाश माथुर ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण फैला है और उससे जो हानियाँ हो रही हैं जो हमने कोरोना में देखा और पर्यावरण प्रदूषण से दुष्प्रभाव फैल रहे हैं इससे निजात के लिये सभी अपना प्रयास करते हैं लेकिन हम दूसरों के घरों से ना रहकर इस बदलाव की शुरुआत हम सभी मिलकर करें और सभी ये निश्चय करें कि हम सब मिलकर एक पेड़ जरूर लगायेंगे। सिक्किम के राज्यपाल माथुर आज रविवार को चिले के गिरादड़ा में मोहनलाल सायबचन्द कवाड चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक लाख वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार प्रशासन तो प्रयास करते ही है लेकिन जब तक जनजागरूकता व

जनसहभागिता जब प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर से ना हो तो तब तक ये कार्य सफल नहीं हो सकता है इसके लिये शुरूआत प्रत्येक व्यक्ति को करनी होगी। इस अवसर पर उन्होंने सिक्किम में पर्यावरण संरक्षण की योजनाओं के बारे में बताया और नीति में बनाकर कुछ ऐसा करने का आह्वान किया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये राजसभा सांसद मदन राठौड़ ने भी समारोह को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पेड़ मां के नाम अभियान चलाया और कहा कि प्रदेश सरकार में भी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी पौधारोपण के लिये वृक्षारोपण अभियान चलाया और करोड़ों पेड़ लगाये हैं। उन्होंने कहा कि पौधारोपण से पर्यावरण को लाभ प्राप्त होता है और ये पुण्य का कार्य है। इस अवसर पर कार्यक्रम को कैबिनेट

मंत्री जोराराम कुमावत ने भी सम्बोधित किया और पर्यावरण प्रकृति को संरक्षित करने के लिये पेड़ लगाए पर जोर दिया साथ ही इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने संरक्षण की योजनाओं के बारे में बताया और कहा कि यहाँ आगामी दिनों में 7 से 11 लाख पौधे लगाये जायेंगे। इस अवसर पर पर्यावरण प्रेमी आर के नैययर ने भी पौधारोपण के फायदे बताये। पर्यावरण को होगा लाभ आक्सी हब बनेगा लगेगे 11 लाख पेड़ तापमान में लगभग 10 डिग्री की गिरादट होगी। पाली विश्व के मानचित्र पर उभरेगा रिसर्च, पर्यावरण पर्यटन शिक्षा व रोजगार में भी वृद्धि होगी। राज्यपाल माथुर, कैबिनेट मंत्री कुमावत, राज्यमंत्री शर्मा, सांसद राठौड़ व अन्य जनप्रतिनिधियों अधिकारियों ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर राज्यपाल माथुर, कैबिनेट मंत्री कुमावत, सांसद राठौड़ जिला कलक्टर एलएन

हुये अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर कवाड चेरिटेबल ट्रस्ट के शांतिनाल कवाड व ट्रस्ट के अन्य सदस्यों ने पौधारोपण का परिचय दिया और कहा कि यहाँ आगामी दिनों में 7 से 11 लाख पौधे लगाये जायेंगे। इस अवसर पर पर्यावरण प्रेमी आर के नैययर ने भी पौधारोपण के फायदे बताये। पर्यावरण को होगा लाभ आक्सी हब बनेगा लगेगे 11 लाख पेड़ तापमान में लगभग 10 डिग्री की गिरादट होगी। पाली विश्व के मानचित्र पर उभरेगा रिसर्च, पर्यावरण पर्यटन शिक्षा व रोजगार में भी वृद्धि होगी। राज्यपाल माथुर, कैबिनेट मंत्री कुमावत, राज्यमंत्री शर्मा, सांसद राठौड़ व अन्य जनप्रतिनिधियों अधिकारियों ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर राज्यपाल माथुर, कैबिनेट मंत्री कुमावत, सांसद राठौड़ जिला कलक्टर एलएन

मंत्री पुलिस अधीक्षक चुनाराम, आयोजककर्ताओं आदि ने भी पौधारोपण किया। इस अवसर पर राज्यपाल माथुर व अन्य अतिथियों ने पाली पंचायत समिति प्रधान मोहिनी देवी व इस क्षेत्र में अच्छा कार्य करने के लिये विभिन्न लोगों को राज्यपाल ने सम्मानित किया। इससे पहले राज्यपाल को कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने पर गाई ऑफ आनर दिया गया और जिला कलक्टर मंत्री और एसपी जाट ने आवाजी कर स्वागत किया। कार्यक्रम में जिला कलक्टर एलएन मंत्री, जिला पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट, डीएफओ पी बाला मुरुगन, एडीएम भवानी सिंह, उपखंड अधिकारी पाली विमलेन्द्र राणावत, कवाड ट्रस्ट के पदाधिकारी, यूआरटीपी पूर्व अध्यक्ष संजय ओझा, सुनील भंडारी, नरेश ओझा समेत अनेक अधिकारीगण मौजूद रहे।